विचार बिन्दु

कहानी जहाँ खत्म होती है, जीवन वहीं से शुरू होता है। –संजीव

हाथ में हो या डिजिटल डिवाइस पर, किताबें रहेंगी पाठक रहेंगे!

एक अनुमान के अनुसार दुनिया भर में कागजी किताबों, इलेक्ट्रॉनिक किताबों और ऑडियो बुक्स के पाठक साल 2030 तक अपने पसंदीदा साहित्य पर करीब 174 अरब रुपये खर्च करेंगे। हर साल करीब 40 लाख नई किताबें बाजार में आ रही हैं। इसके चलते पाठकों के पास विकल्पों की भरमार है। हमारे यहां भी किताबें खूब प्रकाशित हो रही है। हाल ही में जयपुर में एक लेखिका की छह किताबों का एकसाथ लोकार्पण हुआ तो बीकानेर में भी एक अन्य लेखिका की पांच किताबों का एकसाथ विमोचन हुआ। प्रतिदिन कहीं न कहीं से किसी न किसी की किताब के लोकार्पण की खबर पढ़ने को मिल ही जाती है। कई बार तो ऐसा लगता है कि किताबें छपने का ऐसा सुनहरा दौर शायद पहले कभी नहीं रहा। जब इतनी किताबें छप कर सामने या रही हों तब यह चिंता तो जरूर दूर हो जानी चाहिए कि स्मार्टफोन के समय में किताबों का ज़माना बीत गया। हमारे यहां उन किताबों की भी कमी नहीं जो लेखक अपनी जेब से खर्च करके छपवाता है। ऐसा करके साहित्यकारों की जमात का हिस्सा बनने की ललक भी कुछ लोगों में होती है। करीब 600 साल पहले योहानेस गुटेनबर्ग ने जर्मनी में प्रिंटिग प्रेस का अविष्कार किया तब से दुनिया भर में बड़ी मात्रा में किताबें छपी हैं। गूगल के एक अध्ययन के मुताबिक, साल 1440 में प्रिंटिग प्रेस के अविष्कार से लेकर 2010 के बीच करीब 13 करोड़ हार्ड–बाउन्ड किताबें प्रकाशित हुईं। किताबों के जरिए जो ज्ञान लोगों तक पहुंचा वह मानवता के लिए वरदान ही साबित हुआ। लेकिन, पर्यावरणविदों की शिकायत है कि किताबें जिस कागज पर छपती हैं उसे बनाने के लिए बड़ी संख्या में पेड़ काटे जाते हैं। जंगल के पेड़ वन्यजीवों के मददगार ही नहीं होते बल्कि हवा को भी स्वच्छ करते हैं और जलवायु परिवर्तन की वजह बन रहे कार्बन को थामने में सहायता करते हैं। ब्रिटेन की किताबें छापने वाली एक बड़ी कंपनी पेंगुइन रैंडम हाउस, जो हर साल लगभग 15 हजार किताबें प्रकाशित करती है, का दावा है कि अब वह अपनी किताबें छापने के लिए पर्यावरण मित्र कागज का इस्तेमाल कर रही है। उसकी एक अधिकारी बताती है कि उनकी किताबों में इस्तेमाल होने वाला सौ फीसदी कागज फॉरेस्ट स्टीवर्डशिप काउंसिल (एफएससी) से प्रमाणित है। यह काउंसिल टिकाऊ या दोबारा उग सकने वाली लकड़ी के पेड़ों की पैदावार का प्रबंधन करने का दावा करती है। मगर दूसरी तरफ कुछ विशेषज्ञ इस दावे को व्यावसायिक प्रचार कह कर खारिज करते हैं। ग्रीनपीस जैसे पर्यावरण समूह ने इस प्रकाशन संस्था पर ग्रीनवॉशिंग का आरोप लगाया है। ग्रीनवॉशिंग का अर्थ है किसी उत्पाद या सेवा के पर्यावरणीय फायदों के बारे में झूठे और भ्रामक बयान दिए जाना। प्रकाशन जगत के लोगों का कहना है कि उनके उद्योग से जलवायु पर होने वाले प्रभाव का 70 फीसदी से अधिक प्रभाव प्रिंटरों और पेपर मिलों की वजह से होता है। पेंगुइन रैंडम हाउस की अधिकारी का कहना है कि उनकी एक औसत किताब छपने की प्रक्रिया में 330 ग्राम कार्बन डाई ऑक्साइड पैदा होती है। इसमें ग्रीनहाउस गैसें भी शामिल हैं। यह एक कप कॉफी बनाने में पैदा होने वाले कार्बन जितना है। इस आंकड़े में एक किताब के छपने से लेकर उसके ग्राहक तक पहुंचने की पूरी प्रक्रिया शामिल है। इसमें मशीनों की कार्य कुशलता, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग और स्याही की किस्मों की भी गणना की गई है। इसकी तुलना में अन्य प्रकाशकों की एक औसत पेपरबैक किताब जलवायु को तीन गुना अधिक प्रभावित करती है। यह करीब एक किलोग्राम कार्बन डाई आक्साइड और दूसरी ग्रीनहाउस गैस पैदा करती है। यह 122 स्मार्टफोन को चार्ज करने और दो कप कॉफी बनाने के बराबर है। किताबों के डेटा विश्लेषकों के अनुसार कागज निर्माण में आए नवाचारों ने किताब छपने से पैदा होने वाले कार्बन फुटप्रिंट को कुछ कम तो किया है लेकिन अब भी जलवायु पर उसका असर काफी ज्यादा है क्योंकि हर साल दुनिया भर में किताबों की लगभग 220 करोड़ कॉपियां बिकती हैं। अगर मान लिया जाए कि हर किताब से 330 ग्राम कार्बन डाई आक्साइड और दूसरी गैसें निकलती हैं, तो इस हिसाब से हर साल किताबों की वजह से सात लाख टन से ज्यादा कार्बन डाई आक्साइड पैदा होती है। यह करीब डेढ़ लाख घरों को साल भर बिजली देने के बराबर है या, डेढ़ लाख गाड़ियों से होने वाले कार्बन उत्सर्जन के समान है।

नियमित तौर पर पढ़ने वालों के लिए एक ई-रीडर पर्यावरण के लिहाज से बेहतर विकल्प हो सकता है। अब हार्ड कॉपी के शौकीनों को सलाह दी जाने लगी है कि वे केवल वही किताबें खरीदें, जो वे वास्तव में पढ़ेंगे। यह भी सलाह दी जाती है कि किताबें पढ़ने के बाद उन्हें रिसाइक्लिंग के लिए भेज दी जाए।

फिर क्यों इतनी पुस्तकें छाप कर यह नुकसान किया जाय और क्यों नहीं किताबों को कागज से अलग करने की कोशिश की जाए? नई पीढ़ी में किताबें डिजिटल रूप में पड़ने की प्रवत्ति बढ़ रही है। यहां तक कि अब स्कूलों के बच्चे भी डिजिटल उपकरणों पर अपने पूरक पाठ पढ़ते हैं। फिर क्यों नहीं किताबें कागज पर कम और इलेक्ट्रॉनिक रीडिंग डिवाइस अधिक पढ़ी जाए। इस डिवाइस का यह फायदा भी है कि इसमें हजारों किताबें आ सकती हैं। इससे ना सिर्फ जंगल बचते हैं, बल्कि लकड़ी से कागज बनाने में लगने वाली ऊर्जा भी बच जाती है। इसके अलावा, इलेक्ट्रॉनिक किताबों को आसानी से किसी भी डिवाइस में क्षण भर में स्थानांतरित किया जा सकता है। ई–रीडर के बाजार में अमेजन डॉट कॉम सबसे बड़ा खिलाड़ी है जो अपने किंडल एप्प पर पढ़ने के जरिए हर साल करीब 48.7 करोड़ ई–बुक्स बेचता है। अमेजन के अनुसार हर महीने दुनिया भर में करीब 50 लाख लोग किंडल ऐप या डिजिटल डिवाइस पर किताबें पढ़ते हैं। यह तथ्य है कि हाल के वर्षों में युवा पाठकों में ई–बुक्स की लोकप्रियता बढ़ी है। एक अनुमान के अनुसार दुनिया में 2027 तक ई–बुक्स पाठकों की संख्या 110 करोड़ तक पहुंच सकती है। मगर क्या इससे पर्यावरण और जलवायु से संबंधित फायदे होंगे? डिजिटल उपकरणों के अपने कुछ नुकसान हैं। इनके उत्पादन में बहुत ज्यादा पानी और ऊर्जा का इस्तेमाल होता है। इनकी बैटरी बनाने के लिए कॉपर, लिथियम और कोबाल्ट जैसी दुर्लभ धातुओं और खनिजों का खनन होता है। ये उपकरण आमतौर पर प्लास्टिक से बने होते हैं, जो जीवाश्म ईंधन से प्राप्त होता है। किताबों की भांति यहां भी उनके उत्पादन चरण जलवायु सबसे ज्यादा प्रभाव करने के लिए जिम्मेदार है। ई–रीडर को इस्तेमाल करने के लिए उन्हें नियमित अंतराल पर चार्ज करना पड़ता है। कागज की किताबों के साथ यह समस्या नहीं होती। उनके लिए इंटरनेट कनेक्शन और चार्जिंग की जरूरत नहीं होती। किसी किताब की हार्ड कॉपी दशकों तक चल सकती हैं और कई लोगों के साथ साझा की जा सकती हैं। दूसरी तरफ, एक ई–रीडर तीन से पांच साल तक ही चलता है। किताबों का निस्तारण करना और रिसाइकल करना भी उतना जटिल नहीं होता। हालांकि, अमेजन जैसी कुछ कंपनियां अपने उपकरणों के लिए रिसाइक्लिंग कार्यक्रम चलाने लगी हैं, जिससे ई–कचरा ना बढ़े।

जापानी अध्येताओं का कहना है कि भौतिक और डिजिटल दोनों ही तरह की किताबों का पर्यावरणीय प्रभाव जटिल है। उन्होंने 2017 में पारंपरिक किताबों और ई–रीडर पर पढ़ने से होने वाले ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि अगर डिजिटल डिवाइस पर तीन साल के भीतर 15 या उससे ज्यादा किताबें पढ़ी जाएं, तो ई–रीडर जलवायु के लिए ज्यादा बेहतर साबित होता है। हालांकि, आईपैड के मामले में तीन सालों में 25 किताबें पढ़नी होंगी। इसका मतलब है कि किंडल पर साल में एक या दो किताबें पढ़ने से उत्सर्जन में ज्यादा कमी नहीं होगी। लेकिन जब पाठक दोनों ही माध्यमों से पढ़ेंगे तो क्या होगा? अध्यायनकर्ताओं का मानना हैं कि बहुत से लोग अब भी कागज की किताबें पढ़ना चाहते हैं, भले ही वे कुछ ई–बुक्स भी पढ़ते हों। लगभग 33 फीसदी अमेरिकी पाठक इसी श्रेणी में आते हैं। नियमित तौर पर पढ़ने वालों के लिए एक ई–रीडर पर्यावरण के लिहाज से बेहतर विकल्प हो सकता है। अब हार्ड कॉपी के शौकीनों को सलाह दी जाने लगी है कि वे केवल वही किताबें खरीदें, जो वे वास्तव में पढ़ेंगे। यह भी सलाह दी जाती है कि किताबें पढ़ने के बाद उन्हें रिसाइक्लिंग के लिए भेज दी जाए। मगर बहुत से लोग इसे किताबों के प्रकाशकों का अपने माल की बिक्री बढ़ाने का उद्यम करार देते हैं। उनके उद्यम में किस तरह की किताबें उनके लिए मुनाफे वाली साबित होती हैं जैसे सवाल के जवाब में बाजार में किताबों की बिक्री पर निगाह रखने वाले बताते हैं कि सेल्फ–हेल्प किताबों की बिक्री सबसे अधिक होती है। हमारे दैनिक जीवन के हर पहलू पर सलाह देने वाली किताबें बाज़ार में मिल जायेगी। सबसे ज्यादा कमाई करने वाली किताबें सबसे बोल्ड दावे करती हैं। सेल्फ–हेल्प पुस्तकों की प्रभावशीलता को अक्सर बढ़ा–चढ़ाकर पेश किए जाने की आलोचना की जाती है, मगर उनकी तासीर कुछ ऐसी होती है कि कोई यदि ऐसी किसी किताब को हाथ में उठा ले तो वह उसके पन्ने पलटते ही चला जाता है। पुस्तक प्रकाशन का उद्योग भी विपणन और प्रचार पर चलता है। ठीक से विपणन और प्रचार न हो तो पुस्तकों के रद्दी में परिवर्तित होने में देर नहीं लगती। तो क्या डिजिटल किताबें लक्षित लोगों तक पहुंचती है और हमें जंगलों और गर्म होती धरती को बचाने के लिए कागजी किताबों की बजाय ई–बुक्स पढ़ना शुरू कर देना चाहिए? जवाब आसान नहीं है क्योंकि डिजिटल किताबें जंगलों को तो बचाती हैं, लेकिन जहरीला इलेक्ट्रॉनिक कचरा भी पैदा करती हैं। कुछ भी हो हाथ में हो या डिवाइस पर, किताबें रहेंगी और उनके पाठक भी रहेंगे।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

प्रधानमंत्रीजी के चुनावी भाषणों से राजस्थानी भाषा मान्यता की उम्मीद बनती है

राजेन्द्र जोशी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुनावी भाषा पर भरोसा करें तो लोकसभा चुनाव के बाद राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की उम्मीद दिखाई दे रही है। पहली बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजस्थान की चुनावी सभाओं में राजस्थानी कहावतें एवं भाषा का खूब प्रयोग कर रहे हैं।

चुनावी सभाओं के दौरान जिस उत्साह से प्रधानमंत्री स्थानीय लोक देवताओं की जयजयकार के साथ राजस्थान के शूरवीरों की धरती को प्रणाम कर रहे है। प्रधानमंत्री मोदी को स्थानीय नेताओं ने लोक भाषा एवं लोक रंग में रंगने का आग्रह किया होगा, जिसको उन्होंने स्वीकार करते हुए चुनावी भाषा के साथ–साथ राजस्थानी भाषा से अपनापन दिखाने का प्रयास भी किया है । बाड़मेर की चुनावी सभा में उन्होंने यह कहा था की भाषा एवं धर्म के नाम पर पिछली कांग्रेस की सरकारें लोगो को बांटती रही । इससे यह उम्मीद बन सकती है कि जिस भाषा के नाम पर छलावा होता रहा शायद नरेन्द्र मोदी अब उस राजस्थानी भाषा के नाम पर छलावा नहीं होने देंगे। लम्बे समय से राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए आंदोलन होता रहा है। प्रधानमन्त्री जी के प्रत्येक वाक्य का अर्थ होता है वह बार–बार कहते रहे हैं कि समस्याओं को लम्बित रखकर कांग्रेस सरकार ने उलझा कर रखा। हम भी पिछली सभी सरकारों से राजस्थानी भाषा की मान्यता की मांग करते रहे जिसका समाधान किसी भी सरकार ने नहीं किया।

उन्होंने जब भाषा की बात की तो हमको थोड़ी उम्मीद बनती है कि प्रधानमंत्री कहते हैं कि भाषा और धर्म के नाम पर छलावा हुआ। राजस्थानी भाषा की मान्यता का समाधान भी नहीं हुआ यह बात हमारे स्थानीय सांसदों को प्रधानमंत्री जी को स्पष्ट करनी चाहिए।

राजस्थानी भाषा को किसी भी सरकार ने संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया। राजस्थान से नरेन्द्र मोदी को प्यार है और वह राजस्थान के नेताओं पर भरोसा भी खूब करते है इसका उदाहरण हमारे सामने है कि पिछले लोकसभा में लोकसभा अध्यक्ष राजस्थान के कोटा से आते है और राज्यसभा सभापति के रूप में भी राजस्थान के नेता को उन्होंने यह अवसर दिया। फिर वह जब यह कहते हैं कि हम भाषा और धर्म के नाम पर छलावा नहीं होने देंगे। ऐसे में राजस्थान के नवनिर्वाचित होने वाले उन पच्चीस लोकसभा सदस्यों की जिम्मेदारी बनती है कि वें आने वाली संसद में राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने हेतु हमारी मांग प्रधानमन्त्री जी को करेंगे। राजस्थान के नवनिर्वाचित सांसदों से उम्मीद की जाती हे कि नरेन्द्र मोदी जी को यह जरुर आग्रह करेंगे की राजस्थान की मीठी और अपनापन लिए हुए राजस्थानी भाषा है। खुद प्रधानमंत्री जी भी चुनावी सभा में राजस्थानी लोकोक्तियां, राजस्थानी शब्दों, राजस्थानी कहावतें एवं राजस्थानी भाषा में संवाद कर रहे है ।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद–साहित्यकार
लेखक
हिन्दी–राजस्थानी भाषा के लेखक है।

निवाई कृषि मण्डी में सौंफ की आठ हजार बोरी बिकने आई

व्यापारियों ने बताया कि मंडी में सौंफ के भाव 8 हजार से 11 हजार 500 रूपए रहे हैं

निवाई, (निसं)। कृषि मण्डी में इन दिनों नई सौंफ की आवक बढ़ गई है। जिससे मंडी परिसर सौंफ के ढेरों की सुगन्ध से महकने लगा है। मण्डी में जगह–जगह सौंफ के ढेर लगे हुए हैं। व्यापारियों ने सौंफ की बोली लगाकर खरीद की।

- **मण्डी में सरसों, चना, गैहूं व जौ सहित कई जिंसें भी बिकने के लिए आ रही है**

मण्डी व्यापारी शिवप्रकाश पारीक ने बताया कि मण्डी में सौंफ गंगापुर, बौंली, लालसोट, सपोटरा, गंगवाडा, उमर गांव, भरचून सहित कई क्षेत्र से सौंफ आ रही है। मण्डी में करीब आठ हजार से अधिक सौंफ की बोरियां बिकने के लिए आई है। व्यापारियों ने बताया कि मंडी में सौंफ के भाव 8 हजार से 11 हजार 500 रूपए रहे हैं। सरसों की बम्पर आवक के बाद अब मंडी में सौंफ की आवक बढ़ने से एक और मंडी की आय में बढ़ोतरी हो रही है, वहीं मंडी में रौनक बनी हुई है। उन्होंने बताया कि मण्डी में सरसों, चना, गैहूं व जौ सहित कई जिन्से भी बिकने आ रही है। सौंफ की खरीद में अमित कटारिया, व्यापारी सुशील कोलाडा, संजय कठमाणा, अमित धामाणी, गिर्राज मौठूका, पप्पू कठमाणा, अखिल कटारिया, कपिल खण्डेलवाल, राजेन्द्र चौधरी कमल पहाडी, पदम सेदरिया, योगेश जैन, बन्टू जगतपुरा, राजेन्द्र टोडवाल, बन्टी कठमाणा सहित अनेक व्यापारी लगे रहे।

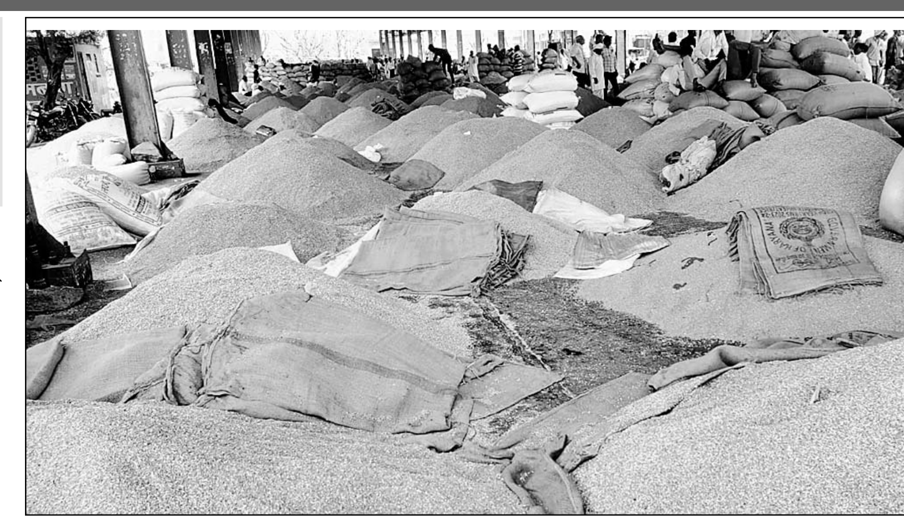

निवाई कृषि उपज मण्डी में नई सौंफ की व्यापारियों ने बोली लगाई।

ग्रामीणों ने पत्थरों से पीट-पीटकर लेपर्ड को मारा

वन विभाग की टीम लेपर्ड का शव सागवाड़ा वन विभाग के ऑफिस ले आई

डूंगरपुर, (निसं)। तालाब से नहाकर लौट रहे युवक को लेपर्ड ने हमला कर घायल कर दिया। बदले में गुस्साएं ग्रामीणों ने पत्थरों से पीट–पीटकर खाई में गिरे लेपर्ड की हत्या कर दी। वन विभाग की टीम अंतिम संस्कार के लिए लेपर्ड का शव सागवाडा वन विभाग के ऑफिस ले आई। घटना सागवाडा और धंबोला वन क्षेत्र के बॉर्डर पर मेवडा गांव का है।

- **तालाब से नहाकर लौट रहे युवक पर लेपर्ड ने हमला कर घायल कर दिया था**

मेवड़ा दरबार घाटी निवासी जयंतीलाल पुत्र कमलाशंकर मंगलवार सुबह करीब साढे आठ बजे तालाब पर नहाने गया था। नहाने के बाद जब वह वापस घर लौट रहा था। उसी समय पास की एक खाई में छिपे लेपर्ड ने उस पर हमला कर दिया। जिससे युवक घायल हो गया। हमले के बाद लेपर्ड फिर से खाई की ओर चला गया। युवक के चिल्लाने पर ग्रामीण मौके पर पहुंचे और खाई में गिरे लेपर्ड पर पत्थर बरसाना शुरू कर दिया। जिससे लेपर्ड की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर डूंगरपुर डीएफ ओ रंगास्वामी और धंबोला रेंजर नरेश ननोमा और वन विभाग की अन्य टीम मौके पर पहुंची। टीम ने लेपर्ड के शव को खाई से बाहर निकाला और अपने साथ सागवाड़ा वन विभाग के ऑफिस ले आई। वन विभाग ने पशु चिकित्सकों को बुलाया है। जिनसे शव का पोस्टमॉर्टम कराने के बाद अंतिम संस्कार किया जायेगा। मृत लेपर्ड मादा थी और दो माह की थी। वन विभाग मामले की जांच में जुटा है। इससे पहले फरवरी माह में वरदा वन क्षेत्र में भी ग्रामीणों ने एक लेपर्ड को घेरकर मार दिया था।

वन विभाग की टीम अंतिम संस्कार के लिए लेपर्ड के शव को सागवाडा वन विभाग के ऑफिस ले गई।

भारत से इटली तक साइकिल यात्रा पर निकले लिली व एरे

- **लोगों को प्रकृति अनुकूल भवन निर्माण, देशी प्रजातियों को बचाने, प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने का संदेश देंगे**
- **जर्मन मूल की तथा तमिलनाडु में रह रही लिली तथा इटली मूल के हैं एरे**

उदयपुर, (कासं)। भारत एक वृहद जैव विविधता वाला देश है। पर्यावरण की रक्षा तथा वनस्पतियों व जीवों के प्रति प्रेम यंहा की संस्कृति रही है। लेकिन विकास के नाम पर प्रकृति पर हो रहा आघात पीड़ादायी है। युवा वर्ग को प्रकृति अनुकूल जीवनशैली अपनाकर अपने कार्बन फुटप्रिंट को न्यूनतम करना चाहिए तथा पर्यावरण को समृद्ध बनाना चाहिए। यह विचार तमिलनाडु से इटली तक साइकिल यात्रा पर निकले लिली व एरे ने विद्या भवन पॉलिटेक्निक में आयोजित युवा पर्यावरण संवाद में व्यक्त किए। संवाद पॉलिटेक्निक की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, ग्रीन पीपल सोसायटी तथा सक्षम संस्थान के साझे में आयोजित हुआ। उल्लेखनीय है कि जर्मन मूल की तथा अपनी तीन वर्ष की उम्र से तमिलनाडु में रह रही लिली तथा इटली मूल के एरे अपने देशी प्रजाति के श्वान स्नूक के साथ तेरह हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर निकले हैं। वे लोगों को प्रकृति अनुकूल भवन निर्माण, देशी प्रजातियों को बचाने, प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने का संदेश देते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान जा रहे हैं। संवाद में ग्रीन पीपल सोसायटी के सुहेल मजबूर तथा डॉ. ललित जोशी ने कहा कि युवा वर्ग स्वयं में प्रकृति सेवा का भाव विकसित करें। प्रारंभ में प्राचार्य डॉ. अनिल मेहता ने उदयपुर की प्रकृति संरक्षण संस्कृति पर प्रकाश डाला।

लिली व एरे।

राशिफल

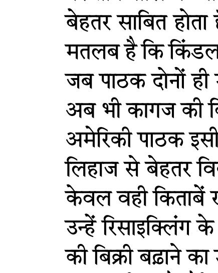

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 17 अप्रेल, 2024

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, आश्लेषा नक्षत्र गुरूवार प्रातः 7:57 तक, शूल योग रात्रि 11:50 तक, कौलव करण दिन 3:15 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मेष, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–कुम्भ, बुध–मीन, गुरू–मेष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन–रात है। ज्वालामुखी योग दिन 3:15 से आरम्भ होगा। आज श्री रामनवती है, बसन्त नवरात्रा पूर्ण होंगे। आज स्वामी नारायण जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:16 तक, शुभ 10:51 से 12:26 तक, चर 3:37 से 5:13 तक, लाभ 5:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:05, सूर्यास्त 6:48

मेष
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में शुभ–मांगलिक और धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज रचनात्मक कार्यों में समय व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।